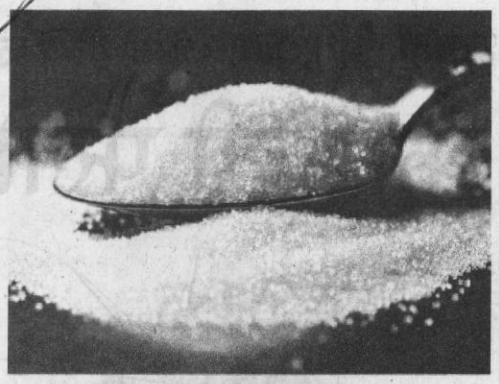

महाराष्ट्र के शुगर प्रॉडक्शन में 41.5% की गिरावट

[जयश्री भोसले | पुणे]

लगातार दो साल सूखे के हालत के कारण इस सीजन में 28 फरवरी तक महाराष्ट्र का शुगर प्रॉडक्शन पिछले साल के इसी पीरियड के मुकाबले 41.5 फीसदी तक कम है। पेराई का सीजन एक हफ्ते में खत्म हो जाने का अनुमान है और राज्य में शुगर का कुल प्रॉडक्शन 42 लाख टन रहने का अनुमान है।

राज्य के शुगर कमीशनरेट के आंकड़ों के मुताबिक, 28 फरवरी तक महाराष्ट्र की शुगर मिलों ने 41.15 लाख टन शुगर का प्रॉडक्शन किया, जबकि पिछले साल के इसी पीरियड के दौरान राज्य के शुगर प्रॉडक्शन का आंकड़ा 70.37 लाख टन था। इस बकार अभी तक सिर्फ 19 शुगर मिलें ऑपरेशनल हैं, जबकि पिछले साल इस दौरान 106 मिलें ऑपरेशनल थीं। पेराई का मौजूदा सीजन 8-10 दिनों में पूरा हो जाने का अनुमान है और इससे 2016-17 के राज्य के प्रॉडक्शन में 1 लाख टन और शुगर की बढ़ोतरी हो सकेगी।

- **महाराष्ट्र के** शुगर प्रॉडक्शन में गिरावट और अगला मॉनसून सीजन कमजोर रहने की आशंकाओं के मद्देनजर देश में शुगर इंपोर्ट की जरूरत पर बहस जारी है
- **इंडियन शुगर** इंडस्ट्री की ओर से इंपोर्ट की जरूरत पर चर्चा किए जाने के मद्देनजर न सिर्फ शुगर की कीमतों को लेकर खतरा मंडरा रहा है, बल्कि गन्ने की कीमत को लेकर भी अनिश्चितता का माहौल है

महाराष्ट्र के शुगर प्रॉडक्शन में गिरावट और अगला मॉनसून सीजन कमजोर रहने की आशंकाओं के मद्देनजर देश में शुगर इंपोर्ट की जरूरत पर बहस जारी है। दरअसल, मौसम का अनुमान जताने वाली ग्लोबल एजेंसियों ने फिर से अल नीनो के संकेत दिए हैं।

इंडियन शुगर इंडस्ट्री की ओर से इंपोर्ट की जरूरत पर चर्चा किए जाने के मद्देनजर न सिर्फ शुगर की कीमतों को लेकर खतरा मंडरा रहा है, बल्कि गन्ने की कीमत को लेकर भी अनिश्चितता का माहौल है। एक तबके का मानना है कि शुगर की ऊंची कीमतों के कारण सरकार गन्ने की ऊंची कीमत तय कर सकती है। बाकी का कहना है कि गन्ने की कीमत में पिछले दो साल से बदलाव नहीं हुआ, लिहाजा इनमें बढ़ोतरी तय है।

भारत किसान संघ के बयान में कहा गया है, 'गन्ना किसानों ने पिछले 4-5 महीनों में ज्यादा गन्ना पैदा किया और नए बीज के खरीदने के लिए निवेश किया। हम गन्ने की कीमत में एक रुपये की गिरावट भी नहीं चाहते। इससे गन्ने की कीमत के भुगतान में देरी हो सकती है।' सरकार ने 2016-17 में शुगर की कीमतों को इससे पिछले साल के स्तर यानी 230 रुपये प्रति क्विंटल पर रखा था। हालांकि, 2011-12 से 2013-14 के दौरान गन्ने की कीमतों में 45 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। 2010-11 में यह 145 रुपये प्रति क्विंटल था, जो 2013-14 में 210 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया। इसके बाद इसमें 9.5 फीसदी की बढ़ोतरी की गई और यह 230 रुपये प्रति क्विंटल हो गई।

Economic times
2/3/17